शिक्षक - रवि शंकर राय   विषय - अर्थशास्त्र, M.A-II

दिनांक - 01-07-2020, 2:10 PM

आर्थिक वृद्धि तथा आर्थिक विकास (Economic Growth and Economic Development)

1. विकास अर्थशास्त्र में द्वैधवाद अभिप्राय है - आधुनिक तथा पारम्परिक क्षेत्रों का सह-अस्तित्व ।
2. प्रेबिश सिंगर की अवधारणा के अनुसार विकासशील देशों की संवृद्धि में बाधक है - वस्तु व्यापार
3. उत्कर्ष (Take off) अवस्था और 'उच्च व्यापक उपभोग की ~~अवस्था~~ अवस्था' में कोई विशेष अन्तर नहीं है।
4. कुजनेत्स के अनुसार, विकास की प्रक्रिया में आय असमानताओं में प्रवृत्ति पाई जाती है - पहले बढ़ने और फिर घटने की ।
5. संवृद्धि की सहज दर (Natural rate of growth) को ठीक-ठीक परिभाषित करता है - यह वह न्यूनतम दर है जिस पर श्रम के पूर्ण रोजगार सहित उत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।
6. आर्थिक वृद्धि का वाणिकवादी सिद्धान्त मुख्य रूप से सम्बन्ध है - स्वर्ण के आयात के माध्यम से संचालन में हुई मुद्रा की मात्रा में वृद्धि से ।
7. हैरोड की प्राकृतिक वृद्धि दर है - वह वृद्धि दर जो जन-संख्या की वृद्धि और तकनीकी सुधार के फलस्वरूप होती है।
8. आय की उच्च विषमता की अवस्था में आय का वितरण होता है → एक उल्टे J आकार का वितरण

नर्क्स के अनुसार, अल्पविकसित अर्थव्यवस्था में प्रच्छन्न बेरोज-
गारी पूंजी निर्माण का एक स्रोत हैं, यदि सभी अनुत्पाद श्रमिको
1. का निर्वाह व्यय उत्पादक श्रमिको द्वारा उठाया जा रहा हैं।
2. को कर्ज देकर परिसम्पतियां उपलब्ध करायी जा रही हो।
3. को तत्काल उत्पादकता बढ़ाने वाला निर्माण कार्यो पर
जुटा दिया जाए।

10. (a) आर्थिक संवृद्धि का नव-क्लासिकी सिद्धान्त → मीड
(b) आर्थिक विकास का बड़ा धक्का सिद्धान्त → रोजेस्टीन रोडान
(c) क्रांतिक न्यूनतम प्रयास थीसिस → लेबेन्स्टीन
(D) सामाजिक द्वैत → J. H. बुक

11. रोस्टोव "अग्रणी क्षेत्रको के विकास को अर्थव्यवस्था के उत्थान की एक शर्त मानते हैं। अन्य क्षेत्रको के उत्पादो की मांग इन्ही क्षेत्रको के मांग के जरिए संचरित होती है।"

12. निवेश निर्माण के क्षेत्र में, सबसे उपयुक्त आंतरिक प्रतिफल दर (IRR) वह हैं जो — निवल (Net) वर्तमान मूल्य को अधिकतम करती हैं।

13. इस प्राक्कल्पना का कि राष्ट्रो के विकास के इतिहास मे आय असमानता की मात्रा आरंभिक चरणो में बढ़ती हैं और बाद के चरणो में घट जाती हैं- प्रतिपादक हैं — साइमन कुजनेत्स

14. प्रच्छन्न बेरोजगारी के सम्बन्ध में —
1. यह संभाव्य बचतो का प्रतिनिधित्व करती हैं।
2. श्रम की सीमान्त उत्पादकता शून्य अथवा अत्यंत निम्न है।
3. यह संयुक्त परिवार प्रणाली के कारण है।
4. यह ग्रामीण क्षेत्रो तक सीमित हैं।

15. जीवन सूचक की भौतिक गुणवता (PQLI) आधारित हैं — साक्षरता के प्रतिशत, शिशु मृत्यु दर तथा आयु संभाविता पर।

16. बुनियादि सिद्धान्त जिसपर हैरोड तथा डोमर ने बल दिया और जिसे संवृद्धि के सभी आधुनिक सिद्धान्तों में समाविष्ट किया गया है — निवल निवेश का द्वैध प्रभाव

17. यह दिया गया हो कि संवृद्धि दर $g = 5\%$ और सीमान्त बचत प्रवृति $MPS = 0.5$ हैं, तो हैरोड के मॉडल के समानरूप पूंजी निर्गत अनुपात का मूल्य होगा 10।

राउल प्रेबिश (सिंगर) द्वारा प्रस्तुत, विकासशील देशों की व्यापार शर्तों के सुदीर्घकालीन गिरावट के समाधान के लिए —

1. प्राथमिक उत्पादों की मांग की निम्न आय लोच
2. विनिर्मित वस्तुओं के बजारों की संरचना प्राथमिक वस्तुओं के बजारों की संरचना से अधिक एकाधिकारी होती है।
3. विनिर्मित वस्तुओं की गुणवत्ता में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

19. " विकास निश्चल स्थिति में होने वाला एक ऐसा सतत एवं स्वतः प्रवर्तित परिवर्तन है जो उस समय विद्यमान संतुलन को सदा के लिए परिवर्तित एवं विस्थापित कर देता है। इसकी तुलना में संवृद्धि दीर्घकाल में आनेवाला एक क्रमिक एवं सुधार परिवर्तन है जो बचत एवं जनसंख्या की दर में क्रमिक वृद्धि द्वारा पैदा होता है।" विकास एवं संवृद्धि की इस सुपरिचित परिभाषा को देने वाला है — J.A. शुम्पीटर

20. एक संकल्पना के रूप में मानव पूंजी निर्माण की बेहतर व्याख्या उपलब्ध कराते हैं —

1. किसी देश के व्यक्तियों को अधिक पूंजी के संचयन का अवसर प्रदान करती है।
2. देश के लोगों का ज्ञान, कौशल-स्तरों में और क्षमताओं में वृद्धि करने का अवसर प्रदान करती है।
3. अगोचर धन का संचय संभव बनाती है।

21. हर्षमैन के अनुसार "अभिसारी" श्रृंखला में वे निवेश परियोजनाएं समाविष्ट हैं, जो जितनी बाह्य मितव्ययिताओं का सृजन करती हैं उनसे अधिक का विनियोग करती हैं और 'अपसारी' श्रृंखला में वे निवेश परियोजनाएं समाविष्ट हैं जो जितनी बाह्य मितव्ययिताओं का विनियोग करती हैं उनसे अधिक का सृजन करती हैं। इस दृष्टि से शक्ति और परिवहन में किये गए निवेश — अपसारी श्रृंखला के हैं।

22. ⓐ पूंजी आवर्त कसौटी → बुकनान-पोलक।
ⓑ सामाजिक सीमान्त उत्पादकता कसौटी → कान-चेनरी।
ⓒ काल श्रेणी कसौटी → ए.के. सेन।
ⓓ पुनर्निवेश दर कसौटी → गेलेन्सन-लीबेन्स्टीन।

संतुलित संवृद्धि की मूल व्यवस्था का सरोकार किससे है:—
→ सभी क्षेत्रको में समान राशि का निवेश

24. आकृति से क्या अनुमान लगाया जा सकता है—

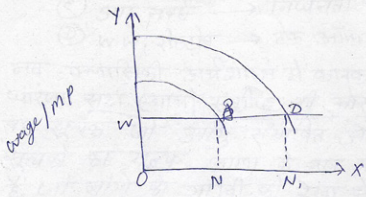

quantity of Labour

1. पूंजी के प्रतिफल में वृद्धि होती है जिससे आगे और निवेश को प्रोत्साहन मिलती हैं क्योकि पूंजीपति में औसत से ऊंची सीमान्त बचत प्रवृति होती है।

2. पूंजी बिन्दु 'B' तक श्रम को काम पर रखता है इस बिन्दु पर उत्पादन में श्रम का अंश OWBN होता है।

25. निर्धनता के दुष्चक्र को उत्पादन के एक ही लाइन में स्वतः हो रहे निवेश के बजाय पूंजी का तुलनकालिक प्रयोग करके तोड़ा जा सकता है। इस कथन में उत्पादन की एक ही लाइन में से अभिप्राय है— अर्थव्यवस्था के किसी विशेष क्षेत्र में निवेश

26. आर्थिक संवृद्धि के मार्क्सवादी विश्लेषण के साथ जो कथन जुड़े है—

1. इतिहास किसी भी रूप में संयोगिक घटनाओं का समुच्चय नही है। यह कतिपय अन्वेषणीय नियमों का अनुसरण करता है जो समाजीक संगठन के सदा परिवर्तनशील और नित नए रूपों को जन्म देती है।

2. पूंजीवाद की स्थापना में आरंभिक औपनिवेशिक विस्तार ने प्रमुख भूमिका निभाई थी।

3. प्रकृति मामलो को इस प्रकार विन्यस्त करती है कि उनके द्वारा निर्धारित उचित न्याय प्रणाली ही विकास को बढ़ावा देने का सर्वोत्तम साधन बन जाती है।